eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 08, August 2023

गिरिराज किशोर के उपन्यासों में गाँधीवादी विचारधारा

[1]अमरेन्द्र कुमार मिश्र
[1]प्रवक्ता हिन्दी, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान अतरसंड, प्रतापगढ़, उ0प्र0

Abstract

गिरिराज किशोर मूलतः गांधीवादी विचारधारा से प्रेरित रचनाकार हैं। जिसके कारण उनकी दृष्टि में राष्ट्रहित सर्वोच्च स्थान रखता है, परंतु यह राष्ट्रहित ना तो व्यक्तिगत हित को बाधित करके आना चाहिए और ना ही एकांगी पूंजीवाद के सहारे। गिरिराज किशोर की रचनाओं में व्याप्त विचारों के आधार पर कहा जा सकता है कि भारत को भी सर्व समाज की उन्नति तथा विकास को अपने विकास का पैमाना मानते हुए आगे बढ़ना चाहिए ,अपना विकास करना चाहिए। परंतु यह विकास विनाश के सहारे नहीं आना चाहिए। गांवों को भी स्वतंत्र,सुविधा संपन्न और आत्मनिर्भर होना चाहिए। परंतु आत्मकेंद्रितता को बढ़ाने वाली पूंजीवादी व्यवस्था व्यक्तियों को स्वार्थी बनाती जा रही है। वे सामाजिक विचारों एवं आवश्यकताओं को नजरअंदाज करते जा रहे हैं। उनका एकमात्र उद्देश्य अपना पेट एवं जेब भरना रह गया है। परिवार,समाज तथा देश के प्रति अपने कर्तव्यों से उदासीन हुए व्यक्तियों का यह समूह अंग्रेजियत की रंग में रंगा हुआ है। खोखली दिखावट और उच्चता का प्रदर्शन इस वर्ग की विशिष्ट विशेषता है। इसके समानांतर एक दूसरा वर्ग निम्न वर्ग के किसानों और मजदूरों का भी है। जो गरीबी,अशिक्षा और अंधविश्वासों से जर्जर मूल्य और मान्यताओं के सहारे जीवन जीने की कोशिश कर रहा है। इन परस्पर विरोधी विचारधाराओं के टकराहट का परिणाम घुटन, मूल्यहीनता और विकृतियों के रूप में परिवार समाज और देश में दिखाई पड़ रहा है।

बीज शब्द– गिरमिटिया, सामंतवादी समाज, विचारधाराओं की टकराहट, गांधीवाद, मानवीय मूल्य।

Introduction

प्राचीन गांधी जी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न थे। उनका व्यक्तित्व विराट और समग्र दृष्टि सम्पन्न था। वे वास्तव में महात्मा थे। उनके कृतित्वों ने उनको महात्मा बनाया था। एक महान राजनेता होने के साथ–साथ वे महान समाज सुधारक, मौलिक शिक्षा–शास्त्री, प्रखर अर्थशास्त्री, सृजनात्मक मानवतावादी, उत्कृष्ट विचारक, प्रखर वक्ता, अडिग नेतृत्वकर्ता, बलिदानी, देश भक्त, अध्यात्मिक, वैज्ञानिक, निस्पृह संत, निष्काम कर्मयोगी तथा इन सबसे बढ़कर मनुष्यता को गढ़ने वाले मनुष्य थे। गांधी जी में ज्ञानी, योगी, भक्त तीनों के सम्मित्रण मिलते हैं। ज्ञानी के रूप में वे आत्मा, परमात्मा, जीवन के लक्ष्य जैसे प्रश्नों पर सोचते हैं। इनका बड़ी ही सरलता और सहजता से समाधान भी करते चलते हैं। भक्त के रूप में उन्हें कुछ भी नहीं चाहिए। वे अपना सर्वस्व ईश्वर के चरणों में समर्पित करते हैं। उससे जो कुछ भी मिलता है उसे ही ग्रहण करते हैं। अधिक की अपेक्षा नहीं रखते हैं। योगी के रूप में वे कर्मयोगी हैं। गीता के कार्ययोगी हैं। कर्म करने के बाद फल की इच्छा उनको नहीं है। उनका सारा जीवन ही सच्चे योगी का जीवन लगता है। उनकी तुलना संसार के बड़े से बड़े सन्त से कर सकते हैं। संसार के लाखों लोगों के लिए मानव–संस्कृति के सर्वश्रेष्ठ तत्वों के प्रतीक थे। उन्हांने सत्य–अहिंसा के नैतिक साधनों द्वारा अपने निहत्थे और सदियों से भयाक्रांत देशवासियों को संसार के सबसे समर्थ और शक्तिशाली साम्राज्य के सामने सीना तानकर खड़ा होने

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 08, August 2023

की प्रेरणा और शक्ति प्रदान की। गिरिराज किशोर अपने उपन्यास 'पहला गिरिमिटीया' में गांधी जी के व्यक्तित्व को संघर्षमय और मानवता को सुरक्षित करने वाला बताया है। मोहनदास गांधी अफ्रीका पहुँचकर भारतीयों के हितों और अधिकारों की रक्षा के लिए व्यापक संघर्ष करते हैं। उन्होंने असहाय और कमजोरों की सहायता के लिए टालस्टाय फार्म की स्थापना किया। वे अन्याय के खिलाफ सत्याग्रह आंदोलन चलाते हैं। जेल में बंद किये जाने पर जेलर के अत्याचार के खिलाफ उपवास रखते हैं। गांधी आश्रम के लोगों की गलती को अपनी गलती मानते हैं। वे अपने आपको वैरिस्टर नहीं सफाई मजदूर समझने वाले महामानव हैं। गांधी जी का राजनीतिक जीवन एवं पारिवारिक जीवन संघर्षमय था। उन्होंने अपने जीवन की अपेक्ष्य समग्र उपेक्षित मानव की सेवा के लिए जीना स्वीकार किया। वे सामाजिक समरसता के समर्थक और छुआछूत के घोर विरोधी थे। ''गांधी जी का सारा जीवन कर्ममय था। उनका व्यक्तिगत साध्य में विश्वास था, लेकिन वे इस साधना को तब तक खिलाफ समझते थे जब तक कि उसका प्रयोग समाज की भलाई के लिए न हो। गांधी जी के जीवन का लक्ष्य केवल यही नहीं था कि वे भारत को अंग्रेज़ों की गुलामी से छुटकारा दिलायें, उनका वास्तविक लक्ष्य तो भारत का और फिर सारे संसार का सत्य और अहिंसा के आदर्शों पर निर्माण करना था। गांधी जी के लिए भारत की आज़ादी तो इस लक्ष्य को प्राप्त करने का एक साधन मात्र थी। इस स्थिति में महात्मा गांधी ने समय–समय पर अपने लेखों, भाषणों और पत्रों में विभिन्न विषयों पर अपने विचार प्रकट किए हैं। इन विचारों के अनुशीलन से यह स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाता है कि उनका अपना एक विशिष्ट दर्शन था। उनके अपने कुछ विशिष्ट सिद्धान्त थे। उनके काम करने की अपनी एक शैली थी।''[1]

गांधी जी दक्षिण अफ्रीका में अपने सफल आन्दोलनों के बाद 1915 में भारत आये थे। यहाँ भारतीय राजनेताओं के विचार को और तत्कालीन स्वाधीनता संग्राम के अगुवाओं के द्वारा उनका व्यापक अभिनन्दन और स्वागत किया गया था। चंपारन आंदोलन 1917 से गांधी जी भारतीय राजनीति में सक्रिय भूमिका अदा करते हैं। 1920–21 से भारतीय राजनीति में गांधी का नाम सर्वमान्य नेता के रूप में लिया जाने लगता है। यही वह काल खण्ड है जबसे गांधी का प्रभाव भारतीय राजनीतिक साथ ही साथ सम्पूर्ण सामाजिक और राजनीतिक जीवन पर परिलक्षित होने लगता है। साहित्य जगत पर भी गांधी जी का व्यापक प्रभाव पड़ा । 1921 से लेकर समकालीन हिन्दी साहित्य गांधी जी के प्रभावों से प्रभावित है। मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर, सुमित्रानन्दन, सुभद्रा कुमारी चौहान, सोहनलाल द्विवेदी, भवानी प्रसाद मिश्र, माखन लाल शर्मा जैसे कवियों ने गांधी जी से प्रभावित होकर काव्य रचना किया तो प्रेमचन्द, जैनेन्द्र तथा गिरिराज किशोर जैसे अनेकों कथाकारों ने गांधी के विचारों से प्रभावित होकर अपनी कहानियों, नाटकों तथा उपन्यासों की रचनाऐं की। गांधी जी ने राष्ट्रीय मुक्ति के आन्दोलन को शांति से लड़ने का आग्रह किया जिस पर चलकर अनेक लेखकों तथा कवियों ने राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए गांधी जी के आदर्शों तथा उपायों को ही स्वीकार किया और आगे बढ़–चढ़कर भाग लेते हुए सृजनात्मक हथियारों से आज़ादी की लड़ाई को आगे बढ़ाया। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद और पहले के हिन्दी साहित्य के अनेक कथाकारों ने गांधी जी के विचारों, दर्शनों से प्रभावित होकर रचनायें की। प्रेमचंद, जैनेन्द्र, विष्णु प्रभाकर, वासुदेव आठले, स्वरूप

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 08, August 2023

कुमार बख्शी, विनोद शंकर व्यास, आनंद प्रकाश जैन, चैतन्य भट्ट, पारस नाथ सरस्वती, अमृतलाल नागर आदि के सृजनात्मकता पर गांधी जी का प्रभाव दिखाई पड़ता है। प्रेमचन्द के गबन, कर्मभूमि, कायाकल्प, गोदान आदि उपन्यासों में कृषक जीवन की मार्मिक कथा तथा निर्मला उपन्यास में दहेज पीड़िता तथा सेवासदन में सामाजिक दृष्टिकोण से निंदनीय मानी जाने वाली वेश्यावृत्ति की समस्या को उजागर करने में गांधीवादी नारी उद्धार विषयक विचारों का प्रभाव दिखाई पड़ता है। विष्णु प्रभाकर की 'खण्डित पूजा' और 'नागकांस' कहानी भी गाँधी के प्रभाव से प्रभावित है। रेणु का प्रसिद्ध उपन्यास मैला आँचल का ग्राम स्वराज गाँधी के प्रभाव से प्रभावित है। प्रसिद्ध कहानीकार सोमवीरा की कहानी रेत के टीले, अधूरी गाँठ, राख की पुड़िया में दहेज जैसी कुप्रथा की भर्त्सना की गयी है, जो गाँधी जी के विचारों से प्रभावित है। गाँधी जी स्त्री–समाज की प्रगति और विकास के लिए दहेज प्रथा के विरोधी तथा महिला शिक्षा के समर्थक थे। गाँधी जी सत्य और अहिंसा के साथ ही साथ सेवा, त्याग और शान्ति को समाज की उन्नति के लिए प्रमुख हथियार मानते हैं। इनकी इस विचारधारा का प्रभाव बलदेव उपाध्याय की 'पतिव्रता का व्रत', स्वरूप कुमार बख्शी की 'बुलबुल', 'प्यार कभी बूढ़ा नहीं होता' आदि कहानियों पर परिलक्षित होता है।

गिरिराज किशोर गाँधीवादी विचारों, उनके दर्शन और चिंतन से प्रभावित हैं। इनके उपन्यासों 'चिड़ियाघर', 'जुगलबन्दी', 'इन्द्रसुने', 'परिशिष्ट', 'असलहा', 'अन्तर्ध्वंस', 'पहला गिरमिटिया', 'नीम के फूल', 'चार मोती बेआब', 'पेपरवेट', 'रिश्ता और अन्य कहानियाँ', 'हमारे मालिक सबके मालिक' आदि पर गाँधी जी के विचारों का प्रभाव दिखाई पड़ता है। गिरिराज किशोर विभिन्न स्थानों पर सरकारी सेवाओं में रहने के बावजूद भी घूसखोरी, भ्रष्टाचार, असत्य और अन्याय का डटकर सामना करते रहे हैं। यही कारण है कि वे अपनी सरकारी नौकरी से बार–बार इस्तीफा देते रहे हैं। उनके उपन्यासों में अभिव्यक्त दलित जीवन की समस्या, नारी समाज की प्रताड़ना और उत्पीड़न, गांधी के प्रभाव का परिणाम हैं। 'परि' तथा 'यथा प्रस्तावित' उपन्यासों में उन्होंने भारतीय दलित वर्ग की तमाम त्रासद समस्याओं को विश्लेषित किया है। देश की महान शिक्षा संस्थाओं में दलितों के प्रति रवैया किस तरह पशु से भी बदतर है, गिरिराज किशोर ने व्यक्त किया है। इस दृष्टि से देखें तो उन्होंने भारतीय दलित, अछूत वर्ग की तमाम त्रासद स्थितियों और मानवीय सरोकार को विश्लेशित एवं निर्धारित करने की कोशिश की है। उनका लेखन यथास्थितिवाद के विरोध में परिवर्तन का हिमायती है।

गिरिराज किशोर जी प्रगतिशील विचारों से प्रभावित हैं। वे समाज को मानव विकास का केन्द्र मानते हैं। उनकी रचनाओं में समाज एवं जीवन, यथार्थ रूप में चित्रित हुआ है। उनका मानना है कि व्यक्ति की सोच, जीवन–दृष्टि, उसके संस्कार एवं अनुभव समाज से निर्मित और विकसित होते हैं। प्रेमचन्द, फणीश्वरनाथ रेणु की तरह उनका दृष्टिकोण भी मानवतावादी रहा है। यही कारण है कि जीवन की जटिल समस्याओं, घातों–प्रतिघातों, समस्याओं तथा विकृतियों को उन्होंने अपनी कथाओं में प्रस्तुत किया है। वे अपने उपन्यासों में वर्तमान जीवन की विभिन्न समस्याओं को चित्रित ही नहीं करते हैं अपितु उनका विश्लेशण भी करते चलते हैं, कि कैसे इन समस्याओं से समाज को उबारा जा सके। ''गिरिराज किशोर की साहित्यसाधना पिछले पैतालीस वर्षों से अविरत जारी है। साठोत्तरी परिस्थितियों के घातों–प्रतिघातों, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, राजनीति, उपभोगवादी खुली आर्थिक

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 08, August 2023

व्यवस्था, अफसरशाही भ्रष्टाचार, अवसरवादिता, जातिवाद, लोकतन्त्र तथा धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक आदि परिस्थितियों ने उन्हें प्रभावित किया और इस प्रभाव को उन्होंने अपने कथा–साहित्य में अंकित किया है।''2 गिरिराज किशोर भारतीय सामाजिक जीवन की समस्यायें गाँधी विचारों के आलोक में देखते हैं। उनकी रचनाओं में चाहे अहिंसा की बात हो, सामन्ती समाज की बात हो, दलितों के शोषण और उसके साथ छुआछूत की बात हो या फिर नारी समाज की स्थिति और उसके दोयम दर्जे की समस्याओं का चित्रण हो, वे उन्हीं परिस्थितियों में करते चलते हैं। स्वाधीनता के बाद भी नारी के जीवन में बहुत सुधार नहीं हुआ। अर्धांगिनी और शक्ति–रूप मानी जाने वाली नारी दोयम दर्जे और शोषण का शिकार बनी हुई है। नारी समाज अछूत समाज से भी ज्यादा पीड़ित है। स्त्री ही स्त्री की शोषक और उत्पीड़क बनी हुई है। नारी का शोषण और नारी के साथ होने वाला अन्याय लगातार बढ़ता जा रहा है। आज स्त्री विमर्श ने स्त्री के अनेक अधिकारों के लिए आन्दोलन छेड़ रखा है। स्त्री उत्थान के लिए सरकार के द्वारा भी अनेक प्रयास किये जा रहे हैं। बड़ी–बड़ी घोषणाएँ की जा रही हैं। स्त्री शिक्षा, स्त्री रोजगार और स्त्री स्वातन्त्र्य की बातें हो रही हैं लेकिन धरातल पर कुछ भी सुधरता हुआ दिखाई नहीं देता है। सामन्ती व्यवस्था में चहार–दीवारी के अन्दर मकड़ जाल में जीवन जीने वाली स्त्री की स्थिति में आज भी कोई परिवर्तन नहीं आया है। घर से लेकर बाहर तक उसे आज भी अनेक उलझनों, कटाक्षों को सुनना पड़ता है। फिल्मों और विज्ञापनों में तथा कथित स्वतन्त्रता के नाम पर नारी को प्रचार की वस्तु मानकर प्रस्तुत किया जाता रहा है। स्त्री आज अपने अस्तित्व को बचाने के लिए लगातार संघर्ष कर रही है। गिरिराज किशोर ने अपने उपन्यासों में नारी के इसी संघर्षमय जीवन और उसकी प्रताड़ित जिन्दगी को चित्रित करने का प्रयास किया है। 'दो' की नीमा पुरुष सत्ता प्रधान समाज व्यवस्था में नारी की दयनीयता का प्रतीक है। उसका संघर्ष समग्र नारी जीवन का संघर्ष है। नारी परिवार या समाज की रीढ़ होती है। लेकिन भारतीय समाज में नारी की स्थिति दयनीय है। 'ढाईघर', 'जुगलबन्दी' 'दो' 'तीसरी सत्ता' आदि उपन्यासों में नारी की दयनीयता चित्रित है। सामन्तवादी समाज में सारे नीति–नियम, धर्म–कानून व प्रतिबन्ध सिर्फ नारी के लिए ही बने हुए हैं। गिरिराज किशोर ने अपने उपन्यासों में नारी के प्रति अत्याचार करने वाले वर्ग में नारी वर्ग को ही प्रमुख जिम्मेदार घोषित किया है। जुगलबन्दी में माँ और बुआ वीरू बाबू की पत्नी के प्रति पशुवत व्यवहार रखते हैं।'3

गिरिराज किशोर की सामाजिक संकल्पना सर्वमंगल की है। समकालीन सामाजिक व्यवस्था इतनी जटिल और दुरूह हो गयी है, कि मानवीय मूल्य और सामाजिक नीतियाँ भी प्रभावित हो रही हैं। बदलते हुए जीवन मूल्यों, आश्यकताओं तथा जीवन की जटिलताओं ने अनेक समस्याओं को जन्म दिया है। आज सामाजिक नियम तथा सामाजिक बन्धन शिथिल हो गये हैं या फिर शिथिल कर दिये गये हैं। पहले समाज को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए जो नियम कानून, परम्परायें, मान्यताएं आदि जीवन क्रम को निर्धारित करती थीं आज वे कमजोर हो गई हैं। पहले जो इन नियमों और विधि–विधानों को तोड़ता था उसे समाज प्रताड़ित करते हुए समाज बाह्य घोषित करता था। उसे सामाजिक प्रताड़ना दी जाती थी, जिससे कोई भी व्यक्ति सामाजिक बन्धनों को तोड़ने का प्रयास नहीं कर पाता था लेकिन आज यह स्थिति बहुत बदल गयी है। आज जो पुराने नियमों–बन्धनों को स्वीकार करता है उसको परम्परावादी तथा दकियानूस कहकर हेय दृष्टि से देखा जाता है। ''अपनी

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 08, August 2023

सीमा से बाहर जाकर जीने वाले लोग उन सब लोगों को हिकारत की नजर से देखते हैं जो सीमाओं से बाहर नहीं जाते। इन सवालों से ताल्लुक खत्म हो जाने का मतलब है कि पूरा समाज एक पाताल गामी कुएं में धकेल दिया गया है।''

अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'जुगलबन्दी' में गिरिराज किशोर ढ़हती समान्ती व्यवस्था के बीच इस बात को चित्रित करते चलते हैं कि समाज में नारी की स्थिति ठीक नहीं है। पुरूष ही नहीं नारी भी स्त्री को प्रताड़ित और पीड़ित करने में पीछे नहीं रहती है। वीरू बाबू की पत्नी जो शिवचरण सिंह की बहु है वह बीमार है। वह पैरों में अपंगता और पीड़ा के कारण चलने में असमर्थ है। शिवचरण सिंह स्वयं उसके प्रति बहुत चिन्तित हैं। वे उसकी हर प्रकार से देख–भाल करवाने का प्रत्यन करते हैं लेकिन माँ जी और बुआ जी उसे बार–बार प्रताड़ित करती हैं। उनको यह विश्वास नहीं है कि बहू वास्तव में पैरों की बीमारी से पीड़ित है। वे यह मानती हैं कि बहू बीमारी का बहाना बनाकर पड़ी है। ''माँ लगातार बोलती रही, अब तो सबको भारी लगने लगी। तुम्हें तो बाहर के काम से छुट्टी नहीं मिलती। सिबनाथ को चटनी–मसाले, गाली–गलौज, बाग–बगीचों से फुर्सत नहीं मिलती। बहू है, वो हर बखत पलंग पर ही पड़ी–पड़ी मनहूसियत फैलाती रहे। कोई उल्टे उसी की टंडवाल कर दे।''4 समकालीन लेखकों में गिरिराज किशोर सामाजिक सन्दर्भों को अनेक रूपों में चित्रित करते हैं। स्वतन्त्रता के बाद भी भारतीय समाज अनेक भागों में विभाजित और विखण्डित है। हर वर्ग अपने ही हित साधने में लगा रहता है। यही कारण है कि भारतीय समाज में आज अनेक विकृतियां, बुराइयां तथा कमियां आ गयी हैं। एक ही परिवार के विभिन्न सदस्य पारस्पारिक मतभेदों और मनमुटावों की विकृति से पीड़ित हैं। भाई–भाई, पिता–पुत्र, पति–पत्नी के बीच कहीं वैचारिक टकराव तो कही आर्थिक टकराव आम बात हो गई है। पुरानी पीढ़ी नयी पीढ़ी को सुनने को तैयार नहीं है तो नयी पीढ़ी भी अपने सुख–सुविधा के अनुसार जीवन जीना चाहती है वह अपना जीवन अपने अनुकूल जीना चाहती है। यही कारण है कि दोनों में टकराव जारी है। पारिवारिक विखण्डन जारी है। ''तुम्हारा अस्वस्थ होना तुम्हारे और तुम्हारे घर वालों के लिए एक दुर्घटना है। लेकिन एक साया, एक सीमित क्षेत्र पर छोटा–सा सम्भावित बदलाव बनकर छा गया है। इस बात को तुम जानते हो या नहीं, मैं इस विवाद से फिलहाल अपने को अलग रखना चाहती हूँ। लेकिन इतना जरूर समझती हूँ कि मजबूती के साथ स्थापित परम्परागत कुलीनता को भयभीत करने वाले व्यक्तित्व अव्वल तो पैदा ही नहीं होते, अगर होते हैं तो वे कुलीनता के गुब्बारे में छेद करके ही चैन लेते हैं। जब तक ऐसा नहीं होता, नए युग की शुरूआत नहीं होती। परिवर्तन शब्द का इस्तेमाल मैं जानकर नहीं कर रही।''5

गिरिराज किशोर ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'चिड़ियाघर' में वर्तमान समय में विघटित होते हुए मानवीय मूल्यों को चित्रित किया है। अपरिपक्व, अनुभवहीन, जौहरी को मिसेज रिजवी के निर्देशन में काम करना पड़ता है। दफ्तर में व्याप्त अनुशासनहीनता, भ्रष्टाचार, पदलिप्सा, स्वार्थपरता, अनैतिकता, नौकरीपेशा नारी की दिशाहीनता आदि को सामाजिक शुचिता और ईमानदारी के लिए घातक बताया जाता है। उपन्यास की सारी घटना मिसेज रिज़वी के आसपास घूमती है और मिसेज रिजवी अपने पति का भी अपमान करने में भी नहीं चूकती हैं। उनका सम्बन्ध अपनी ऑफिस के बॉस से है। वे इसे अनैतिक नहीं मानती हैं। अपने उपन्यास 'दो' में लेखक ने यह बताया है कि

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 08, August 2023

मनुष्य –मनुष्य में कोई अन्तर नहीं है, सभी परस्पर समान हैं। किसी भी जाति में जन्म लेने वाला अछूत नहीं है। वह चाहे निम्न वर्ग का हो या उच्च वर्ग का। नीमा को इस बात का आभास तब होता है जब निम्न जाति की बुढ़िया प्रसूती के समय उसकी मदद करती है। बुढ़िया उसकी न केवल मदद करती है अपितु उसके प्रति सहानुभूति और सहयोग भी रखती है। वह बुढ़िया प्रसूति कर्म कराने वाली थी। असुरक्षित और अनिर्णायात्मक स्थिति में खड़ी नीमा को समझाती है कि वह अपने पति के पास चली जाय। वह समझाती है कि अभिजात वर्ग उसे परेशान करेगा। उसका जीना दूभर हो जायेगा। दाई वास्तव में नीमा के लिए धर्म की माँ एवं आत्मीय सिद्ध हुई। 'इन्द्रसुने' उपन्यास में उन्होंने बढ़ते साम्राज्यवाद और पूँजीवाद व्यवस्था से उत्पन्न–आसन्न समस्या को लेकर वे चिंतित हैं। पूँजीवादी व्यवस्था समर्थक अमेरिका आदि विकसित देश विकासशील देशों की धरती पर ललचाई आँखें गड़ा रखी हैं। वे उस पर बड़े–बड़े विशालकाय उद्योग धन्धे स्थापित करना चाहते हैं जो भारतीय जीवन व्यवस्था के लिए बहुत लाभकारी नहीं हैं। यह उपन्यास फैंतेसी के आधार पर बीसवीं शताब्दी के मानवीय संघर्ष और मुक्ति का व्यापक चित्रण करता है। इसमें मनुष्य की, खासतौर से अविकसित राष्ट्रों के लोगों की त्रासदी को चित्रित किया गया है। इस उपन्यास में वे यह बताते हैं किस प्रकार से पूंजीवादी अधिनायक्त्व ने पूरी दुनिया को दो भागों में बांट दिया है। इसमें एक संसार निम्न वर्ग के किसानों और मजदूरों का है जो गरीबी, अशिक्षा, अन्धविश्वास और अनेक प्रकार की जर्जर मूल्य–मान्यताओं से घिरे हुए जीवन जी रहे हैं वहीं दूसरा वर्ग पूँजीपति, उद्योगपतियों, सत्तासीन नेताओं तथा नौकरशाहों का है जो अपनी सुख–सुविधा को लगातार बढ़ाते हुए विलासितापूर्ण जीवन जी रहे हैं।

गाँधीवादी विचार–दर्शन से प्रभावित होने के कारण उनका मानना है कि भारत को भी सर्वसमाज की उन्नति तथा विकास को केन्द्र बिन्दु मानते हुए आगे बढ़ना चाहिए। लेकिन यहाँ भी पूँजीवाद अपने पैर फैला रहा है। वे विकास के खिलाफ नहीं हैं लेकिन विनाश करके विकास नहीं चाहते हैं। वे ग्राम केन्द्रित विकास चाहते हैं। गाँवों को स्वतन्त्र, सुविधा सम्पन्न और आत्मनिर्भर बनाने की सोचते हैं। व्यक्तिगत हित सर्वोपरि हो, राष्ट्रहित प्रमुखता प्राप्त करें। समाजहित और सामाजिक विकास तभी सम्भव है जब राष्ट्रहित सर्वोपरि होगा। आज स्थितियाँ बदलती जा रही हैं। पूँजीवादी व्यवस्था भारत में भी लोगों को आत्मकेन्द्रित करती जा रही हैं। वे स्वार्थी और आत्मकेन्द्रित होते जा रहे हैं। वे समाज की आवश्यकताएं और विचारों को नजरअंदाज करते हैं। उनका एक मात्र उद्देश्य अपना पेट भरना और जेब भरना रह गया है। वे केवल अपने स्वार्थपूर्ति में लगा हैं। अपने सामाजिक दायित्व और कर्तव्य को भूलकर अधिकतम धन संग्रह करने में लगा है। परिवार, समाज तथा देश के प्रति वह उदासीन हो गया है। भारत में भी अंग्रेजियत में रंगा एक वर्ग खड़ा हो गया है जो आज भी खोखली दिखावट और अपनी उच्चता को प्रदर्शित करता है। 'ढाईघर' के बड़ेराय साहब की मानसिकता इसी प्रकार की है। अपनी ताकत और ऊपर तक सम्पर्क होने के कारण ही कृष्णराय ब्राह्मणों की पिटाई करते हैं। सुराजियों के साथ उठना–बैठना पसन्द नहीं करते हैं। इनमें साथ सम्पर्क और प्रेम–सम्पर्क रखना अपनी रसूख के खिलाफ मानते हैं। राघवराय द्वारा सुराजियों के साथ उठने–बैठने को अच्छा नहीं मानते हैं। इस प्रकार राघवराय कहते हैं– ''भैया सुराजियों के साथ उठने–बैठने के लिए जो साहस चाहिए, वह हम जमींदारों के बच्चों में कहाँ ? देश की

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 08, August 2023

आज़ादी को अपने जीवन का उद्देश्य वही लोग बना सकते हैं जिन्हें न जमींन चाहिए और न उससे जुड़ी दौलत और इज्जत। मेरी परवरिश तो गुलामी के एवज में मिली सुख–सुविधाओं में हुई है।''6

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1–गुप्त, विश्व प्रकाश, महात्मा गांधी व्यक्ति और विचार, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1996, पृष्ठ, 63
2–'इन्का,' अशोक प्रखर, गिरिराज किशोर साहित्य और चित्रण, अमन प्रकाशन, कानपुर, 1994, पृष्ठ, 56
3–पटेल, डॉ सोमाभाई, गिरिराज किशोर के उपन्यासों में संवेदना एवं शिल्प, अमन प्रकाशन, कानपुर , 1995 पृष्ठ, 269
4–किशोर, गिरिराज, जुगलबंदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1973, पृष्ठ, 14
5–किशोर, गिरिराज, परिशिष्ट, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984, पृष्ठ, 273
6–किशोर, गिरिराज, ढाई घर, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1992, पृष्ठ, 51